ISSN 2277-1972
RNI-MPHIN/2008/25439

सितम्बर 2022

समय के साखी

प्रगतिशील साहित्यिक पत्रिका

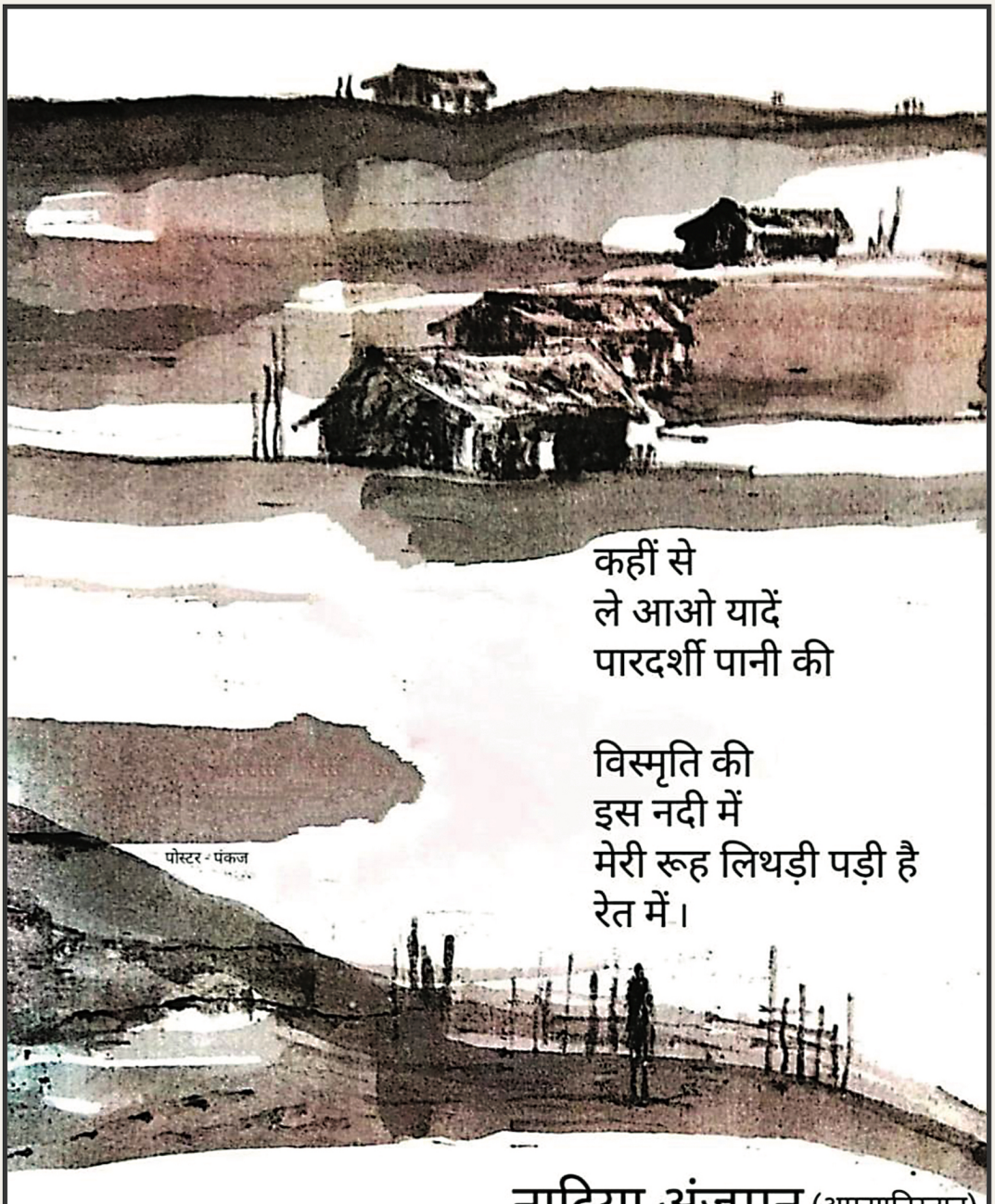

कहीं से
ले आओ यादें
पारदर्शी पानी की

विस्मृति की
इस नदी में
मेरी रूह लिथड़ी पड़ी है
रेत में।

पोस्टर - पंकज

नादिया अंजुमन (अफ़ग़ानिस्तान)

(27दिसंबर,1980 - 04नवंबर,2005)

अनुवाद : राजेश चन्द्र

परामर्श
राजेश जोशी
रामप्रकाश त्रिपाठी
सेवाराम त्रिपाठी

आवरण चित्र : समीर कुलावूर
: पंकज दीक्षित

आरती
संपादक

समय के साखी
अक्टूबर 2022

संपादकीय कार्यालय : 912, अन्नपूर्णा कॉम्पलेक्स,
पी.एण्ड.टी चौराहा के पास, भोपाल-3 (म.प्र.) 462003
मो. : 09713035330, फ़ोन : 0755-4030221
e-mail : samaysakhi@gmail.com
website - www.samaykesakhi.in

आकल्पन : गणेश ग्राफिक्स, भोपाल

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी आरती द्वारा **बॉक्स कॉरोगेटर्स एण्ड ऑफसेट प्रिंटर्स**, 14-बी, सेक्टर-आई, इंडस्ट्रियल एरिया, गोविंदपुरा, भोपाल से मुद्रित कराकर 912, अन्नपूर्णा कॉम्पलेक्स, पी.एण्ड.टी चौराहा के पास, भोपाल-3 (म.प्र.) से प्रकाशित।

यह अंक : ₹ 50/-
संस्थाओं के लिए यह अंक ₹ 60/-(डाक खर्च 25/- अतिरिक्त)
समस्त भुगतान मनीआर्डर/चैक/बैंक ड्रॉफ्ट '**समय के साखी**' के नाम स्वीकार्य होंगे। खाता कं. 451702011003868, IFSC Code UBINO545171 'समय के साखी' नामे, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, शाखा-अरेरा कॉलोनी, भोपाल में भी जमा कर सकते हैं।

नोट : किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र, भोपाल (म.प्र.) होगा।

सर्वाधिकार सुरक्षित - संपादक/प्रकाशक

क्रम

मेरे शब्द : साहित्यिक पत्रकारिता : विकृत और प्रतिक्रियामूलक पत्रकारिता से लड़ने का औजार / 04

आलेख

दलित साहित्य : हमारा साहित्य गालियों का साहित्य है : शरण कुमार लिंबाले / 08

प्रेमचंद का साहित्य और उसका स्त्री पाठ : वीरेन्द्र यादव / 13

भयग्रस्त विवेक की आज्ञाकारिता : कुमार अम्बुज / 16

कहानियां

बहुत घुटन है कोई सूरत-ए-बयां निकले : मनोज कुलकर्णी / 28

लकीरें : रूपा सिंह / 38

कौहँकनी : सोनी पांडे / 46

कविताएं

हरिओम राजोरिया / 50

रविंद्र स्वप्निल प्रजापति / 53

संजीव कौशल / 57

आशीष तिवारी / 60

समीक्षा

'नागरिक समाज' हमारे परिदृश्य के नागरिक समाज की तीक्ष्ण आलोचना है : प्रदीप्त प्रीत / 63

इक्कीसवीं सदी का महाआख्यान : बस्तर बस्तर : बलराज पाण्डेय / 69

रिपोर्ट

देश की महिलाओं द्वारा किया गया पहला भूमि आंदोलन : संजीव चंदन / 79

साहित्यिक पत्रकारिता : विकृत और प्रतिक्रियामूलक पत्रकारिता से लड़ने का औजार

न्यू मीडिया की बहस के दौरान अमेरिकन कहानीकार और उपन्यासकार फिलिप मेयर ने कहा था कि- 'किसी भी अखबार की अंतिम प्रति 2040 में आएगी। उसके बाद वे म्यूजियम की चीज बन कर रह जाएंगे।

और 21वीं सदी की शुरुआत में यह एक बड़ी बहस का विषय था। तब सोशल मीडिया की आमद उस तरह से नहीं हुई थी जैसे कि आज 2022 में है। यह कथन अखबार के लिए था, यानी प्रिंट मीडिया के लिए। साहित्य उसमें भी नीचे के पायदान पर आता है। क्योंकि अखबारों की बनिश्त उसके पढ़ने वाले और भी कम लोग हैं। मेरी कामना और कोशिश है कि फिलिप मेयर और तमाम बुद्धिजीवियों की इस तरह की भविष्यवाणियाँ झूठी साबित हों। और यह सब बैठे ठाले नहीं होगा। इसके लिए बेहतरीन और पुख़्ता काम करने होंगे।

आज का समय बहुत तेज गति से भाग रहा है। पन्ना पलटने तक की जहमत कोई भी नहीं उठाना चाहता। स्क्रोलिंग, जूमिंग, डाउनलोड, शेयर, फॉरवर्ड जैसे शब्दों ने 'ठहराव' शब्द को बिल्कुल उल्टा घुमा कर व्यक्ति की चेतना को हड़बड़ी की प्रोसेस में अनुवादित कर दिया है। आपका शत्रु विजिबल नहीं है। क्योंकि वह कोई व्यक्ति नहीं है, कोई अस्त्र भी नहीं है जिसे खत्म किया जा सके, जिसका विरोध किया जा सके, जिसके खिलाफ कोई क्रांति की जा सके।
ऐसे समय में लिखे हुए शब्द की महत्ता फिर से स्थापित करने की जरूरत है। आज साहित्यिक पत्रिकाएं एक मिशन है जो शब्दों के साथ-साथ उनके अर्थ, लिपि और सामाजिक/ मानवीय उत्तरदायित्व को बचाए